डॉ. विजय मिश्र

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित भौतिक विज्ञानी एवं संस्कृत विद्वान। कवि के तौर पर न्यू इंग्लैंड, दक्षिण एशिया के अनेक देशों में चर्चित एवं सफल यात्राएँ कीं। अनेक गरिमापूर्ण कवि सम्मेलनों में भागीदारी। विगत १८ बरसों से हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सालाना भारतीय कविता पाठ का आयोजन कर रहे हैं।

सम्पर्क : १८०, बेडफोर्ड रोड, लिंकन, एमए ईमेल : misra.bijoy@gmail.com

व्याख्या

वाल्मीकि रामायण : आधुनिक विमर्श-३०

मित्र सुग्रीव-२

हिंदी अनुवाद : मनीष श्रीवास्तव

सूर्य सबको प्रकाश देता है, परन्तु बदले में कुछ नहीं मांगता। पुरातन काल में ऋषि मुनि सूर्यमुख होकर मंत्रोच्चार करते थे। हवा बहती तो है परन्तु वह भी बदले में कुछ नहीं मांगती। हम जीवनदायक शक्तियों के सम्मान में अनुष्ठान करते हैं, पेड़-पौधे हमें फल देते हैं किन्तु बदले में कुछ नहीं मांगते, उन्हें बस कभी कभार हमारी देखरेख की आवश्यकता होती है। हमें उन्हें हानि न पहुंचाने की सीख दी जाती है। मनुष्य विचित्र प्राणी है। मित्रता एक रिश्ता होता है जो यदि एक-दूसरे का पूरक हो तो और बलवान होता है। हमें प्रायः जीवन की कठिनाइयों से जूझने के लिए सहारे की आवश्यकता होती है और वो सहारा मित्रता में परिवर्तित हो जाता है।

सुग्रीव की राम से मित्रता आकस्मिक थी। दोनों अकेले और निराश थे, सुग्रीव को अपने भाई से उसके अत्याचार का बदला लेना था और राम जंगल में अपनी अपहृत पत्नी को ढूंढ रहे थे। सुग्रीव एक वानर थे, एक वनवासी, मानव रूपी विशाल बन्दर। राम एक राजकुमार थे जिन्होंने एक प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए स्वयं वनवास चुना था। पत्नी के अपहृत हो जाने पर उन्होंने स्वयं को इस खतरे में डाला था।

'मुझे नहीं पता कि वह राक्षस कहाँ रहता है, न ही मुझे उसकी उत्पत्ति की कोई जानकारी है, परन्तु मुझे इसका कोई पश्चाताप नहीं है, मेरा हर पग आपकी पत्नी का पता लगाने की ओर ही उठेगा। मैं रावण और उसके पूरे कुल के नाश में अपनी पूरी शक्ति लगा दूंगा! आप मुझसे बहुत प्रसन्न होंगे।'

सुग्रीव ने राम को ढांढस बंधाया।

राम को उदास और हताश देख कर सुग्रीव बोले 'अपने मन की चिंता छोड़कर कृपया अपने आप को संभालें, दुर्बलता आपके व्यक्तित्व को शोभा नहीं देती।'

सुग्रीव जानते थे कि एक मित्र ही होता है जो मित्र का सम्मान वापस दिलाने में सहायक हो सकता है। मित्र को एक मित्र के आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायता करनी चाहिए। मित्र खुशियाँ बाँटता है, निराशा से बाहर निकालता है, वो आशा और सामर्थ्य की प्रतिध्वनि होता है।

सुग्रीव आगे बोले 'मुझे देखिये, मैंने भी अपनी पत्नी को खोया है, किन्तु अपना धैर्य नहीं खोया! मैं तो एक सामान्य वानर हूँ किन्तु आप तो राजकुमार हैं!' राम की आँखों में आंसू देख सुग्रीव बोले 'आपको अपने आंसुओं को संभालना होगा, प्रतिष्ठित व्यक्ति जीवन की कठिनाइयों से विचलित नहीं हुआ करते।'

सीता जीवित हैं या नहीं, राम नहीं जानते थे, उन्हें यह भी पता नहीं था कि अगर सीता जीवित भी हैं तो किस हाल में हैं। सुग्रीव की परिस्थिति राम से बिलकुल अलग थी उन्हें पता था कि उनकी पत्नी कहाँ है। उन्हें ये भी पता था कि बाली का संहार करके उनकी पत्नी को बचाया जा सकता है। परन्तु बाली को मारना इतना आसान भी नहीं था। इस कार्य में सफलता पाने की लिए राम को पूरी सूझबूझ से काम लेना था। एक छोटी सी गलती का परिणाम भयानक हो सकता था। राम को इस अवसाद से बाहर निकलना ही होगा। सुग्रीव को लगा कि उन्हें ही राम की सहायता करनी होगी।

सुग्रीव ने राम से हाथ जोड़कर विनती की 'आप कृपया अपने इस अवसाद से बाहर आएं, आपको अपना पौरुष वापस जगाना होगा!'

फिर बोले 'जो संताप करते हैं उन्हें खुशियां नहीं मिलती, संताप व्यक्ति को दुर्बल बनाता है। आपको अपने दुःख अपने संताप से बाहर आना ही होगा। दुःखी व्यक्ति के लिए जीना भी आसान नहीं होता, आपको अपने दुःख का परित्याग करना ही होगा।'

फिर विनम्र होकर सुग्रीव बोले 'कृपया ये न सोचें कि मैं आपको परामर्श दे रहा हूँ! मैं एक मित्र होने के नाते आपसे कह रहा हूँ! कृपया मेरी मित्रता की खातिर अपने इस दुःख का परित्याग करें।'

राम सुग्रीव के आग्रह से बहुत प्रभावित हुए। उन्हें लगा कि सुग्रीव एक सच्चा मित्र है। राम आश्वस्त हो गए कि सुग्रीव की सहायता से सीता का पता लगाया जा सकता है। उन्होंने अपने आंसू पोंछ दिए। 'परम मित्र को ऐसा ही करना चाहिए। आपकी सलाह की वजह से मैंने अपना मानसिक संतुलन वापस पाया। वास्तव में आपके जैसा मित्र विशेषकर जीवन की ऐसी विषम परिस्थितियों में मिलना दुर्लभ है।' राम बोले।

सुग्रीव ने राम को आगे सलाह दी- 'धनी या निर्धन, दुखी या सुखी, निर्लेश या दोषपूर्ण, एक मित्र ही मित्र के काम आता है!

लोग मित्रता की खातिर धन सम्पदा यहां तक की देश का भी त्याग कर देते हैं।' अपने व्यक्तित्व को परिलक्षित करते हुए सुग्रीव बोले 'आपने मेरी मित्रता को स्वीकारा ये मेरे कुटुंब के लिए एक सम्मान का विषय है, अग्नि इसकी साक्षी है। यद्यपि मैं अपने सारे गुण प्रदर्शित नहीं कर सकता किन्तु समय आने पर आपको पता चल जायेगा कि मैं वास्तव में आपकी मित्रता के योग्य हूँ!'

राम को सालपत्र के आसन पर और स्वयं उनके बाजू में बैठते हुए सुग्रीव ने अपना वृत्तांत सुनना शुरू किया 'मेरे भाई बाली ने मुझे निकालकर मेरी पत्नी का हरण कर लिया। मैं भयभीत और हताश वन में इधर-उधर भटकता रहा। मैं केवल इन ऋष्यमुख पर्वतों के इर्द-गिर्द ही रह सकता हूँ। हे राजकुंवर, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे बाली के भय से बचाएं!'

राम ने गंभीरता से प्रत्युत्तर दिया 'एक मित्र सदैव मित्र के काम आता है। जो छल करे वो मित्र नहीं शत्रु है। आप देखें कि कैसे बाली मेरे बाणों के प्रहार से एक शिला की भांति गिरता है!'

सुग्रीव की आँखों में आंसू थे, वो रोते हुए बोले 'मुझे मेरे राज्य से निष्कासित कर दिया गया! बाली मुझे मारने के तरह-तरह के प्रयास कर रहा है। मैंने उसके बहुत से दूतों को मार गिराया जो मुझे मारने के लिए भेजे गए थे! मैं इसी कारणवश आपको देखकर भयभीत हुआ था और आपसे मिलने के लिए झिझक रहा था। जब बाली का नाश होगा तभी मैं शांति से रह पाऊंगा, मैं अपने आपको सम्पूर्णतः आपकी मित्रता को समर्पित कर रहा हूँ ! सुख में या दुःख में एक मित्र का ही सहारा होता है!'

बार-बार सुग्रीव से उसके भाई के प्राण हरने की विनती सुन राम अचम्भे थे। वो पूरा व्रत्तांत सुनना चाहते थे जिससे कि वो बाली वध की योग्यता तय कर सकें।

'आपके भाई के लिए मेरे मन में 'घृणा नदी में आती बाढ़' के जैसी बढ़ रही है किंतु मैं तुम दोनों में इस शत्रुता का कारण जानना चाहता हूँ। मैं तभी इस कार्य की योग्यता तय कर सकूँगा, कृपया आराम से बैठकर सारी बात बताएँ। मेरे तीर आपके शत्रुओं का नाश कर देंगे।'

सुग्रीव ने राम को बाली और राक्षस दुन्दुभी के बीच हुए युद्ध की बात विस्तार से बताई कि कैसे एक स्त्री के लिए दोनों लड़ते हुए एक गुफा में जा पहुँचे। बाली ने सुग्रीव को गुफा के द्वार की रखवाली के लिए रख छोड़ा। सुग्रीव महीनों तक वहाँ टिके रहे और फिर एक दिन गुफा से बाहर बहते हुए रक्त को देखकर और बाली का अंदर कोई भी स्वर न सुन पाने के कारण उन्होंने ये मान लिया कि बाली मर चुका है। गुफ़ा द्वार एक बड़ी चट्टान से बंद करने के पश्चात वो अपने राज्य वापस आ गए और राज्य भार सम्भाल लिया। किन्तु केवल बाली की क्रूर वापसी तक ही। सुग्रीव के गुफ़ा द्वार पर खड़े रहने के आदेश की अवहेलना के लिए सुग्रीव को बाली के प्रकोप का सामना करना पड़ा।

'मैंने उससे क्षमादान की याचना की, लेकिन उसने मेरी एक न सुनी। उसे लगा कि उस गुफ़ा को चट्टान से बंद करके मैंने उसके विरुद्ध कार्य किया है। उसने एक वस्त्र में मुझे राज्य से बहार निकाल दिया! मेरी पत्नी का हरण कर लिया। मैं उसके भय से पूरी पृथ्वी में भागा-भागा फिरता रहा और बाद में इस ऋष्यमुख पर्वत पर आकर शरण ली क्योंकि यह पर्वत एक शाप के कारण उसकी पहुँच से बाहर है।' सुग्रीव ने याचना की 'हे राजकुमार, आप मेरी दुर्दशा देख सकते हैं! मैं निरपराध हूँ! आप कृपया मुझे बाली की भय से मुक्त करें!'

राम को बाली के व्यभिचारी चरित्र का पता चला। उन्होंने सुग्रीव की दयनीय स्थिति को अपनी दशा के समान समझते हुए कहा 'मेरे सूर्य की भांति चमकते हुए अचूक बाण, उस पापी बाली को क्षीण- क्षीण देंगे। वो पापी जो परस्त्री का हरण करता है, मेरी उस पर दृष्टि पड़ने तक ही जीवित है। आप चिंता न करें, मैं आपके इस दुःख का निस्तारण करूंगा और जल्द ही आपको आपकी पत्नी और राज्य वापस दिलाऊंगा!'

सुग्रीव राम को बाली के बारे में सचेत करना चाहते थे 'मैं आपको बाली की शक्ति और पराक्रम के बारे में बताता हूँ। सूर्योदय से पहले ही बाली पश्चिमी सागर तट से पूर्व तक और दक्षिणी सागर तट से उत्तर तक की परिक्रमा कर सकता है। वह पर्वतों को खंडित कर सकता है और वृक्षों को उखाड़कर फेंक सकता है! वो किसी को भी द्वंद्व में परास्त कर सकता है। जब विशाल दैत्य दुंदुभि उसके सामने आया उसका सर्वनाश करके बाली उसके शव को मीलों तक लात मारते हुए लेकर गया। ये जो चमकती अस्थायों की पहाड़ी देखते हैं, ये दुंदुभि के देह की है। और ये जो सात विशाल साल वृक्ष देखते हैं इन्हें बाली सिर्फ हिला कर इन शाखाएँ तोड़ सकता है। बाली अत्यधिक बलशाली है। आप उसे कैसे धूल चटा पाएंगे!'

ऐसा विवरण सुन लक्ष्मण उलाहना देते हुए बोले 'राम बाली का वध करने में सक्षम हैं इसे सिद्ध करने के लिए भैया राम को क्या करना होगा ?'

सुग्रीव ने प्रत्युत्तर दिया 'मेरी आपको नीचा दिखाने की बिलकुल मंशा नहीं थी, मैं तो केवल ये बताना चाह रहा था कि मेरा भाई बाली आपकी कल्पना से परे, अत्यंत बलशाली है। उसे आज तक द्वंद्व युद्ध में कोई पराजित नहीं कर सका यहाँ तक कि स्वयं देवता उसे उसके कुकर्मों से न रोक सके!'

सुग्रीव कुछ क्षण रुककर बोले 'मुझे अपने भाई की शक्ति मालूम है परन्तु मैं आपके सामर्थ्य से अनभिज्ञ हूँ, आप प्रशंसा के योग्य हैं। आप राख के ढेर में छुपी अग्नि की भांति हो सकते हैं!'

'बाली इन विशाल वृक्षों को एक प्रहार से तोड़ सकता है, मैं आशा करता हूँ कि राम इन्हें एक बाण से चीर सकें। राम चाहें तो उस अस्थि के ढेर को एक लात में ४०० गज दूर फेंक सकते हैं!'

राम ने उस चुनौती को स्वीकार करते हुए उस अस्थियों के ढेर को १० मील दूर फेंक दिया। सुग्रीव उसे परखते हुए बोले 'जब बाली ने शव तो लात मारी थी, तब उसमें रक्त एवं हाड़मांस था! अब ये सूख कर भार विहीन हो चुका है, इस पर लात मारना आसान है!'

'मेरे सारे संदेह मिट जायेंगे यदि आप इनमें से एक सला वृक्ष को अपने तीर से भेद सकें । मैं जानता हूँ कि आप ये कर सकते हैं किन्तु सिर्फ एक बार मेरी प्रार्थना स्वीकार कर इसे करके दिखा दें!' सुग्रीव को लगा कि ये संदेह की अति है, वो मर्यादित भाषा में बोले 'जैसे सूर्य सबसे चमकीला तारा है, हिमालय सबसे महान पर्वत है, सिंह सबसे बलशाली जंतु है, आपका पराक्रम सारे परुषों में सर्वोत्तम है!'

राम का तीर एक पंक्ति में स्थित सात सला वृक्षों को एक साथ भेदता हुआ, पृथ्वी में समाहित होकर वापस तरकस में आ गया। सुग्रीव ये देख कर अचंभित और गदगद थे! ■